



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मक्का के उपयोग एवं मूल्य संवर्धन

(*मुनेश कुमार¹, अशोक सिंघमसेट्टी¹, अनिमा मेहंतों², संतोष कुमार², के. के. नागर³ एवं जे. पी. शाही¹)

¹कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

²भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, बरही, हजारीबाग, झारखंड

³महाराणा प्रताप कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

* muneshbhu94@gmail.com

मक्का, चावल एवं गेहूं के बाद देश की तीसरी सबसे बहुउद्देशीय महत्वपूर्ण अनाज की फसल है। इसकी मुख्य खेती बरसात या खरीफ के मौसम (जुलाई से अक्टूबर) के दौरान की जाती है लेकिन बनारस एवं बिहार में इसकी खेती रबी मौसम में भी आसानी से होती है इसके अनाज का उपयोग खाद्यान, चारा, और औद्योगिक कच्चे माल के रूप में किया जाता है। खाद्यान, पशुओं, सुगरों एवं मुर्गियों के चारे के रूप में उपभोक्ताओं की बढ़ती मांग हेतु देश में मक्का उत्पादन एवं उत्पादकता के स्तर को बढ़ाना आवश्यक है भारतीय मक्का अनुसन्धान संस्थान के द्वारा चलाये जा रहे अखिल भारतीय मक्का परियोजना के तहत .

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य नई किस्मों का विकास एवं मूल्यांकन करना है। इस परियोजना के दौरान नई किस्मों का विकास, एवं मूल्यांकन चयन के विभिन्न स्तरों एवं गुणों को आधार मानकर किया जाता है तथा अंत में जो किसमें गुणवत्ता, स्ट्रेस प्रतिरोधकता, रोग एवं कीटरोधकता कंडिशन में जो बेहतर प्रदर्शन करती है उन प्रविष्टियों /उत्तम किस्मों को प्रमोट कर दिया जाता है

भारतवर्ष में मक्का मुख्यतः जन-जातियों एवं आदिवासियों एवं गरीब किसानों के द्वारा उगाया जाता है। रोजमर्रा की जिंदगी में मक्का का उपयोग कई गुना बढ़ गया है। उम्मीद है कि मक्का की खेती के विस्तार की संभावना है झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में, और इंडो-गैंगेटिक मैदानों में जिससे गरीब, मक्का-आधारित किसान परिवारों के आय एवं जीवन स्तर में सुधार किया जा सके। है और उन्हें अजैविक तनाव-सहिष्णु मक्का प्रदान करता है। संकर फसल-विविधीकरण, गहनता और उच्च पैदावार के लिए वर्षा-आधारित तनाव-ग्रस्त उत्पादन प्रणालियों के लिए अनुकूलित है।

क्वालिटी प्रोटीन मक्का, सामान्य मक्का से दोगुनी मात्रा में महत्वपूर्ण लाइसीन एवं ट्रिप्टोफन एमिनो एसिड प्रदान करती है तथा यह ल्युसीन एवं आइसोल्युसिनलाइसीन एमिनो एसिड का भी अच्छा संसाधन है यह अमीनों एसिड कुपोषण, पोषणिक रक्त क्षीणता, आंतरिकक्षति एवं वृद्धि में होने वाली परेशानियों ये मक्का कृषक कम समय एवं लागत आसानी से उगा सकता एवं बाजार में उच्च भावों में बेची जाती है जिससे किसान को बेहतर लाभ प्राप्त होता है आदि के मरम्मत में महत्वपूर्ण योगदान है।



फोटो: प्रो. जे.पी. शाही और डॉ. पी.एच. जैदी एवं अशोक सिंघमसेट्टी और उनकी टीम " कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश के फार्म पर मक्के के खेतों में सूखे के प्रभावों का सघन निरीक्षण किया।

आज कल मक्का के विभिन्न प्रकार उपलब्ध हैं जिनको विशेष मक्का के नाम से जाना जाता है जैसे क्वालिटि प्रोटीन मक्का, बेबीकॉर्न, स्वीटकॉर्न एवं पॉपकॉर्न बेबीकॉर्न, स्वीटकॉर्न एवं पॉपकॉर्न आदि, इन मक्काओं विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया जिससे की किसानों के आय को बढ़ाया जा सके एवं बुनियादी जीवन स्तर में सुधार करने किया जा सके। मक्का की बहुत संकर किस्में विकसित की गयी हैं जिनको किसान कम लागत, कम खाद, कम पानी एवं कम समय में आसानी से फसल लाभ प्राप्त कर सकता है आज कल मक्का की ऐसी भी किस्में विकसित करने पर शोध चल रहा है की प्रतिकूल वातावरण में जैसे सूखा, बाढ़ एवं उच्च तापक्रम की स्थिति में भी बिना नुकसान हुए अधिक पैदावार ले सकते हैं

इस परियोजना के तहत से किसानों के खेत पर उन्नत संकर प्रजातियों का प्रदर्शन किया जाता है। ताकि हर क्षेत्र के किसानों को आसानी से जानकारी प्राप्त हो सके। अनुसूचित जनजातियों के लिए भी जनजाति परियोजना के माध्यम से संकर प्रजातियों के उन्नत बीज तथा यंत्र आदि उपलब्ध कराये जाते हैं। जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मक्का अनुसंधान केंद्र, सिमीट की परियोजनाओं के माध्यम से जलवायु परिवर्तन रोधी जैसे सूखा प्रतिरोधक, ठंड प्रतिरोधक एवं बाढ़ संभावित क्षेत्रों में अधिक उपज देने वाली संकर किस्मों का भी मूल्यांकन किया जा रहा है। ताकि इन सभी अजैविक दबाव (abiotic stress) के लिए उचित किस्मों का विकास किया जा सके।

संदर्भ

- 1.) जे. एल. बेननेटजे और एस. हेके, (2009)। "हैंड बुक ऑफ मेज़: जेनेटिक्स एण्ड जेनोमिक्स", स्प्रिंगर।
- 2.) तजमुल रौफ शाह, कमलेश प्रसाद और प्रद्युम्न कुमार, (2016)। " मक्का -मानव पोषण और स्वास्थ्य का एक संभावित स्रोत" एक समीक्षा, ठोस खाद्य और कृषि, 2:1.